॥ श्री चौबीस जिन स्तुति प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

ॐ नमः अरिहन्त अतनु, आचार्य उवज्झाय ।
मुनि पञ्च परमेष्टि ए, ॐकार रै मांहि ॥ १ ॥
वलि प्रणमुं गुणवन्त गुरु, भिक्षु भरत मझार ।
दान दया न्याय छाणनें, लीधो मारग सार ॥ २ ॥
भारीमाल पट भलकता, तीजे पट ऋषिराय ।
प्रणमु मन वच काय करी, पांचुं अङ्ग नमाय ॥ ३ ॥
इम सिद्ध साधु प्रणमी करी, ऋषभादिक चौवीस ।
स्तवन करूं प्रमोद करी, जय जश कर जगदीश ॥४॥
मल्लि नेम ए दोय जिन, प्राणी ग्रहण न कीध ।
शेष वावीस जिनेश्वरु, रमण छांड़ व्रत लीध ॥ ५ ॥
वासुपूज्य मल्लिनेम जिन, पारस अने वर्द्धमान ।
कुमर पदै अरु प्रथम वय, धारयो चरण निधान ॥६॥
छत्रपति उगणीस जिन, व्रत तीजी वय सार ।
उत्कृष्ट आयु जिह समय, तसु विण भाग विचार ॥७॥